ब्रह्मा बाबा के कर्म रूपी 18 कदम

जिन्हें हर ब्रह्मा वत्स को फॉलो कर समान बनना है

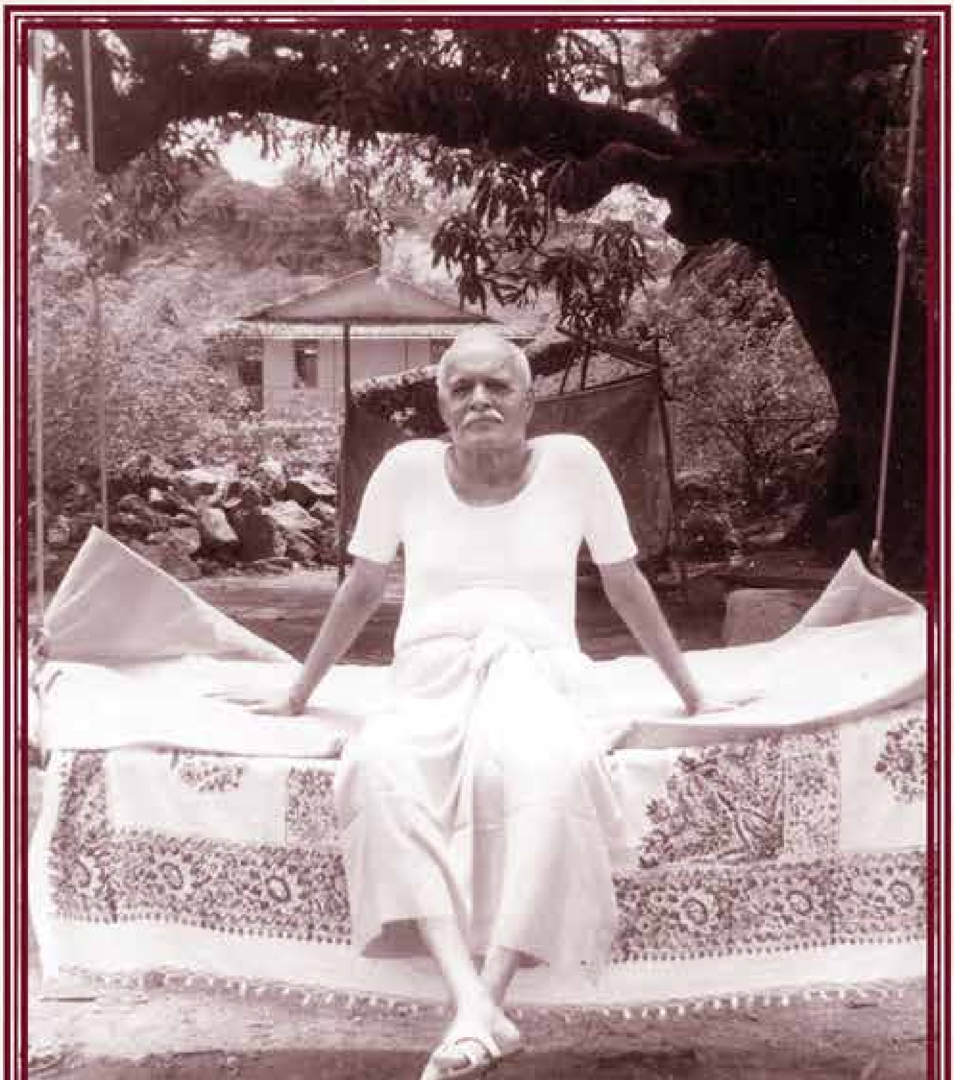

ब्रह्मा बाबा के कर्म रूपी कदम
(जिन्हें हर ब्रह्मा वत्स को फॉलो कर समान बनना है)

1) सबको प्यार तथा सम्मान देकर आगे बढ़ाना

बाबा अति स्नेह और मधुर मुस्कान से मीठे बच्चे, सिकीलधे बच्चे, नूरे रत्न, सर्विसएबुल, रूहानी बच्चे, लाडले बच्चे आदि शब्दों का प्रयोग करके उनमें उत्साह भर देते जिससे हर एक महसूस करता कि यह तो प्यार के सागर परमपिता ही मानव जाति के पिता ब्रह्मा के द्वारा इस अलौकिक स्नेह की वर्षा कर रहे हैं। इस सच्चे प्यार से वह आत्मा शीतलता और उच्च सौभाग्य का अनुभव करती। बाबा के मधुर वचनों को सुनकर हर कोई पवित्र बनने और बनाने के पुरुषार्थ में जुट जाता। बापदादा हर बच्चे को ऐसा प्यार और पालना देते जो वो सांसारिक सुखों को भुलाकर ईश्वरीय परिवार के सम्बन्ध में जुट जाते। ऐसे हम ब्रह्मा वत्सों को भी फालो फादर करते हुए हर एक को प्यार तथा सम्मान देकर आगे बढ़ाना है।

ब्रह्मा बाबा के कर्म रूपी कदम
(जिन्हें हर ब्रह्मा वत्स को फॉलो कर समान बनना है)

2) हर ईश्वरीय कायदे पर चलना और चलाना

बाबा बच्चों को ज्ञानयुक्त जीवन के नियम बताते हुए कहते बच्चे, कायदे में ही फायदा है इसलिए ईश्वरीय नियमों को कभी नहीं छोड़ना। साथ-साथ बाबा कहते बच्चे कानून को कभी अपने हाथ में मत लेना। यदि किसी का कोई अवगुण अथवा दोष आपको दुःख देता है तो आप इधर उधर किसी को न बताकर, वातावरण को दूषित न करके एक बाबा द्वारा शिवबाबा को बताओ तो शिवबाबा उसे स्वयं ही सावधानी दे देंगे। बाबा कहते कि यदि किसी में कोई कमी है तो उस कमी को भरना आपका काम है। उसकी कमियों को वर्णन करते रहना यह महानता नहीं है, उन्हें भरने में ही महानता है।

ब्रह्मा बाबा के कर्म रूपी कदम
(जिन्हें हर ब्रह्मा वत्स को फॉलो कर समान बनना है)

3) हर एक के गुणों को देख उन्हें सेवा में लगाना

बाबा हर बच्चे के गुण वर्णन कर उनमें उत्साह और खुशी भर देते और उसके उसी गुण को सेवा में लगाकर उसका कल्याण कर देते। बाबा कभी किसी बच्चे का अवगुण नहीं देखते। बाबा बच्चों को, निर्धनों को, हर वर्ग तथा हर आयु के व्यक्तियों को आत्मिक दृष्टि से देखते हुए उन्हें लोक कल्याण के किसी न किसी कार्य में लगा देते, जिसमें जो गुण होता बाबा उसके उस गुण को यज्ञ सेवार्थ प्रयोग करते। ऐसे हम सबको फालो फादर करना है।

ब्रह्मा बाबा के कर्म रूपी कदम
(जिन्हें हर ब्रह्मा वत्स को फॉलो कर समान बनना है)

4) स्वयं मेहनत करके दिखाना

बाबा ईश्वरीय सेवार्थ अथवा लोक कल्याणार्थ तन-मन-धन समर्पण करने के बाद वृद्ध शरीर होते हुए भी निरन्तर सेवा में लगे रहते। सेवा-सेवा-सेवा, बस सेवा के लिए और मनुष्यात्माओं को सुख देने के लिए ही उनके विचार चलते। दिन भर में 18 घण्टे से भी अधिक वह कार्य करते। बाबा कहते बच्चे दधीचि त्रअषि के समान इस यज्ञ में अपनी हड्डियां देनी चाहिए तभी तो यह शरीर पावन बनेगा। इस यज्ञ की जितनी जो सेवा करेगा उतना उसको बल मिलेगा और उसकी आयु भी लम्बी होगी। बाबा ने हम बच्चों को यही नारा दिया कि ईश्वरीय सेवा करना ही सौभाग्य बनाना है।

ब्रह्मा बाबा के कर्म रूपी कदम
(जिन्हें हर ब्रह्मा वत्स को फॉलो कर समान बनना है)

5) हर एक को खुशी में लाना और हल्का करना

बाबा स्वयं सदा खुशी में रहते और सदा ऐसी ही बातें सुनाते कि कोई मनुष्य कितना भी अशान्त क्यों न हो, चाहे कितनी उलझनों में पड़ा हुआ हो, बाबा की मधुर मुस्कान को देखते ही उसकी उदासी और चिंता भाग जाती। खुशी का पारा चढ़ जाता। किसी ने भी बाबा के चेहरे पर चिंता या उदासी की रेखा नहीं देखी। बाबा के आसपास वातावरण में भी सदा खुशी की लहरें अथवा खुशी की खुशबू फैली रहती। बाबा सदा बच्चों को खुशी और उल्हास में लाते और कहते बच्चे, माया के विघ्न तो बहुत आयेंगे, तूफान बहुत आयेंगे परन्तु घबराना मत और हिम्मत नहीं हारना। आप विजयी रत्न हो, विजय का तिलक तो आपके माथे पर लगा ही हुआ है।

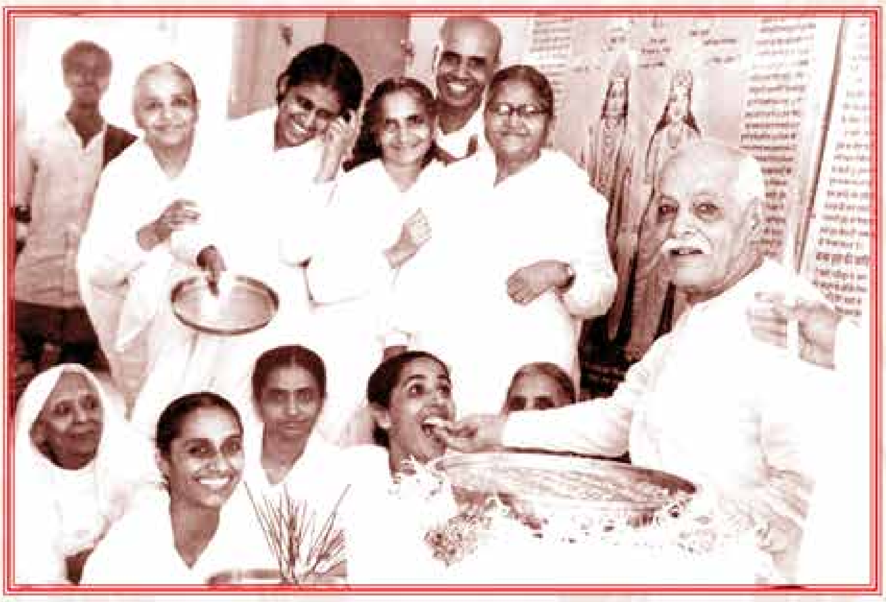

ब्रह्मा बाबा के कर्म रूपी कदम
(जिन्हें हर ब्रह्मा वत्स को फॉलो कर समान बनना है)

6) आलस्य और अलबेलेपन से अतीत तथा निद्राजीत

कहावत है कि सच्चा योगी वह है जो निद्राजीत है। बाबा की जीवन में आलस्य का नामोनिशान नहीं था। शरीर की वृद्धावस्था होने पर भी बाबा दिन-रात मनुष्य आत्माओं के संस्कारों को परिवर्तन करने के कार्य में लगे रहते। बाबा के जीवन में थकावट के चिन्ह कभी दिखाई नहीं दिये। जो काम सामने आया, उन्होंने उसे कभी अधूरे मन से, गफलत या अलबेलेपन से नहीं किया, बल्कि जी-जान से कर्म' होकर, उत्साह पूर्वक मन लगाकर उसे पूरा किया। ऐसे हम बच्चों को भी फालो फादर करना है।

ब्रह्मा बाबा के कर्म रूपी कदम
(जिन्हें हर ब्रह्मा वत्स को फॉलो कर समान बनना है)

7) मैं पन का सम्पूर्ण त्याग

पिताश्री जी ने मैं पन का सम्पूर्ण त्याग कर नम्बरवन को प्राप्त किया। त्याग तो अनेक वत्सों ने किया परन्तु वर्णन तो दूर, बाबा को तो अपने त्याग का भी एहसास नहीं था। बाबा कहा करते थे कि मुझे तो कौड़ियों के बदले स्वर्ग की बादशाही मिल गई। बाबा अपना स्वरूप इतना साधारण रखते थे जो कोई समझ भी न पाये कि ये प्रजापिता ब्रह्मा हैं परन्तु उनकी शालीनता व महानता प्रत्यक्ष उनके होवनहार विश्व महाराजन की परछाई फेंकती थी। मान-शान की बात तो उनसे कोसों दूर थी। इस मैं पन के त्याग के कारण ही बाबा सदा निश्चिंत और अड़ोल थे। ऐसे हम बच्चों को भी फालो फादर करना है।

ब्रह्मा बाबा के कर्म रूपी कदम
(जिन्हें हर ब्रह्मा वत्स को फॉलो कर समान बनना है)

8) ब्रह्मा बाबा सर्वश्रेष्ठ योगी

बाबा बात करते-करते बीच में शरीर से गुम हो जाते अर्थात् अशरीरी हो जाते थे। जैसेकि बातें सुनते हुए भी निर्लिप्त हैं। न तो बाबा विस्तार से सेवा समाचार सुनते और ना ही विस्तार से उत्तर देते। वाणी में आते भी बाबा वाणी से परे रहते थे और अपने दो महावाक्यों से ही हमें भी वाणी से परे उड़ा ले जाते थे। अन्तिम दिनों में तो बाबा के कमरे में सन्नाटा ही सन्नाटा नज़र आता था। जिस पर बाबा की दृष्टि पड़ जाती वह शरीर से न्यारा हो जाता। बाबा के सामने आते ही किसी को भी ज्यादा बात करने की इच्छा नहीं होती, उसे स्वतः ही सर्व समस्याओं का समाधान मिल जाता था।

ब्रह्मा बाबा के कर्म रूपी कदम
(जिन्हें हर ब्रह्मा वत्स को फॉलो कर समान बनना है)

9) सदा निश्चिंत और अचल स्थिति

एक बार बाबा को अनायास ही एक शारीरिक व्याधि ने आ घेरा। परन्तु उस बीमारी में भी बाबा अपनी निश्चिंत और अचल स्थिति में थे। बाबा जब बच्चों के चेहरे की रेखायें गम्भीर वा चिंता की देखते तो मधुर आवाज में कहते बच्चे, मैं तो बिल्कुल ठीक हूँ। ये तो आप सब जानते ही हो कि यह पुराना शरीर है, पुरानी चीज़ को कई चत्तियां लगाकर ही चलाया जाता है। बाकी बाबा को कुछ भी नहीं हुआ है। फिक्र से फारिग रहो बच्चे। बाबा की यह स्थिति सूक्ष्म रूप में सभी वत्सों को यह प्रेरणा दे रही थी कि माया के अतिरिक्त काया की भी यदि कठिन परीक्षा आये तो देह से न्यारा होकर आत्मिक स्थिति में रहने तथा परमात्म स्मृति में स्थित रहने का अभ्यास ऐसा परिपक्व होना चाहिए कि वह रिंचक मात्र भी हमारी स्थिति को बिगाड़ न पाये।

10) सदा कापारी बेहद की खुशी

बाबा को सदा कापारी खुशी में देखा। शिवबाबा के अवतरण एवं मिलन की खुशी बाबा को इतनी पराकाष्ठा रहती कि बाबा के मन वचन एवं कर्मों में उस खुशी का इतना प्रभाव होता कि अशान्त से अशान्त आत्मा भी बाबा के निकटता से अपार खुशी महसूस करती। बाबा कहते बच्चे तुम्हें तो एडी से चोटी तक खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए अथवा कापारी खुशी होनी चाहिए क्योंकि स्वयं त्रिकालदर्शी, त्रिलोकीनाथ, सर्व शक्तिवान शिवबाबा तुम्हें मिला है और वह 2500 वर्षों के लिए स्वर्गीय राज्य भाग्य का अधिकारी बना रहे हैं।

ब्रह्मा बाबा के कर्म रूपी कदम
(जिन्हें हर ब्रह्मा वत्स को फॉलो कर समान बनना है)

11) सागर समान गम्भीर

कराची में जब बाबा के साथ बच्चे सागर के किनारे पर जाकर बैठते तो बाबा मधुर और स्नेह युक्त शब्दों में कहते बच्चे देखो लोग सागर में किचड़ा अथवा कूड़ा डालते हैं तो वह सागर के अन्दर नहीं जाता बल्कि लहरों के साथ बाहर आकर एक किनारे पर लग जाता है। तो इस सागर की तरह आपका भी स्वभाव होना चाहिए। आप बच्चों के मन में अन्दर कोई किचड़ा नहीं ठहरना चाहिए। देखो सागर में ऊपर भले कितनी भी लहरें हैं परन्तु नीचे वह शान्त होता है। आप भी ऐसे ही शान्त और धैर्यवत हो जाओ।

ब्रह्मा बाबा के कर्म रूपी कदम
(जिन्हें हर ब्रह्मा वत्स को फॉलो कर समान बनना है)

12) सादगी और सद्व्यवहार

बाबा सादगी के एक उत्तम उदाहरण थे। वे एक छोटे से कमरे में रहते थे जो पुराने ढंग का था और उसकी छत टीन की चादरों से बनी हुई थी। वही कमरा उनके विश्राम का स्थान, भोजनगृह और छोटा कार्यालय तथा बच्चों से मिलने का स्थान था। बिस्तर पर सफेद चादरें बिछी हुई, दीवारों पर सफेद चूना.... न कमरे की कोई विशेष साज सज्जा थी और न कोई बाहरी बनावट। उस कमरे में बैठकर सेवामूर्ति बाबा ने कितनी आत्माओं को एक नया जीवन प्रदान किया। कितनों ने वहाँ बैठकर प्रभु मिलन का सुख पाया और ईश्वर अर्पित होने का संकल्प लिया। उन्होंने कभी किसी को व्यक्तिगत रूप से फटकार, डॉट-डपट नहीं दी, बल्कि वे सदा सभी से सुकोमल, सुमधुर, सद्भावना पूर्ण और सम्मान सहित शब्दों से वार्ता करते। उनके मीठे बोल, उनकी मीठी दृष्टि, उनके मधुर व्यवहार, ज्ञान की मीठी बातें और उनकी मीठी मुस्कान के कारण उनके निवास का नाम पड़ा मधुबन तपोवन।

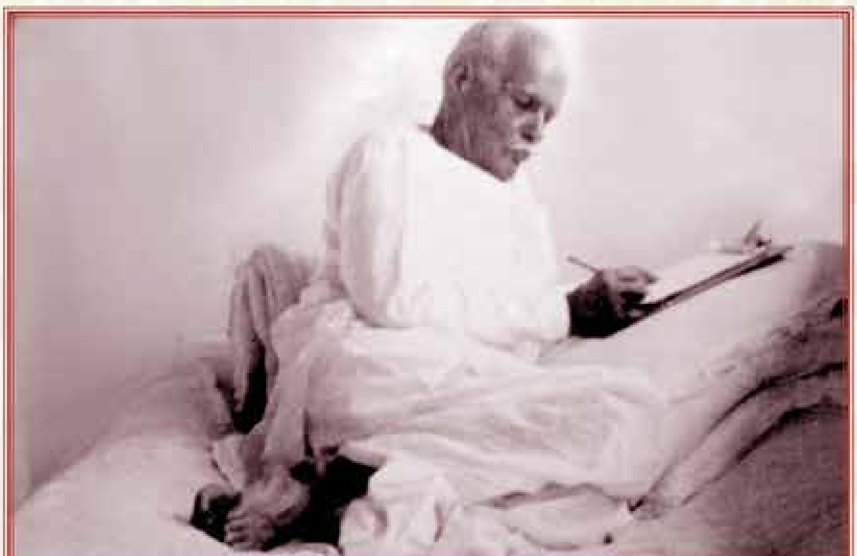

13) स्नेह संरक्षण और सहायता देने में निपुण

एक मानव आत्मा होते भी वे अन्य सभी मनुष्यों से भिन्न थे। उनमें पितापन का प्रेम था। जैसे पिता अपने बच्चों को अच्छा पद प्राप्त करते देख हर्षित होता है वैसे ही हर्ष उन्हें होता था। योग्य पिता की सदा यही इच्छा रहती है कि उसके सभी बच्चे सुयोग्य हों और सदा सुखी हों। ऐसी ही भावना बाबा की अन्य सभी मानव आत्माओं के प्रति रहती थी। वे प्रायः वत्सों को पत्र लिखकर उनका हर्ष, उल्हास, उत्साह और उमंग बढ़ाते रहते थे और उन्हें मार्ग दर्शन देकर माया के कष्टों से उनका सरंक्षण करते थे।

ब्रह्मा बाबा के कर्म रूपी कदम
(जिन्हें हर ब्रह्मा वत्स को फॉलो कर समान बनना है)

14) सभी में योग्यता भरने की कला

वरदान देकर योग्य बनाना और ईश्वरीय सेवा में जुटाना तो ब्रह्मा बाबा की विशेष कला थी। किसी को उन्होंने भवन कला में ऐसा निपुण बना दिया कि उसने इतने बड़े पाण्डव भवन, योग भवन आदि का निर्माण करा डाला तो किसी अन्य को हिसाब-किताब की कला सिखाकर अथवा शीघ्र नोट्स लेने का वरदान देकर लेखाधिकारी अथवा शीघ्र लिपिक बना दिया। जो पहले किसी स्कूल या कालेज में उस विद्या को नहीं पढ़े थे उन्हें पढ़े लिखों से भी अधिक कुशल और अनुभवी बना दिया, यह बाबा की कमाल थी।

ब्रह्मा बाबा के कर्म रूपी कदम
(जिन्हें हर ब्रह्मा वत्स को फॉलो कर समान बनना है)

15) देहातीत बनाने वाली शक्तिशाली दृष्टि

बाबा के नेत्रों की ओर देखने से अपने शरीर को भुलाने के लिए कुछ भी पुरुषार्थ नहीं करना पड़ता और ऐसे लगता कि प्रकाश की गति से आत्मा अशरीरी होकर कहीं दूर-दूर आकाश से पार, ज्योति के देश में जा रही है। यह अनुभव जितना ही सूक्ष्म होता था उतना ही गहरा और उच्च पराकाष्ठा वाला होता था, जो बाद में भी आत्मा की स्थिति को अव्यक्त बनाये रखता था। इससे स्पष्ट समझा जा सकता है कि बाबा की योग स्थिति कितनी परिपक्व, शक्तिशाली एवं गहन रही होगी और स्वयं कितने देहातीत एवं अव्यक्त अवस्था में रहते होंगे।

16) बाबा के जीवन में ज्ञान और प्रेम का अद्भुत मेल

बाबा में ज्ञान की तो अथाह गहराई थी ही तभी तो उनके जीवन में ज्ञान की एक अजीब मस्ती झलकती थी और तभी वे सदा कहते थे कि यह ज्ञान अनमोल और अविनाशी रत्न हैं। वे जिस ज्ञान की बात कहते वह ज्ञान प्रेमपूर्ण था। ज्ञान और प्रेम का उनके जीवन में ऐसा ताल-मेल था कि दोनों को अलग-अलग बताना असम्भव सा था। बाबा के ज्ञान के बोल प्रेम के बिना होते ही नहीं थे और उनके प्रेम के बोल में सदा ज्ञान भरा रहता था और प्रेम तथा ज्ञान दोनों का लक्ष्य मनुष्यात्मा को पवित्र और योगी बनाना ही था।

ब्रह्मा बाबा के कर्म रूपी कदम
(जिन्हें हर ब्रह्मा वत्स को फॉलो कर समान बनना है)

17) जीवन में अद्‌भुत सन्तुलन

बाबा के जीवन में हर प्रकार का सन्तुलन था। वे देही अभिमानी बनने पर तो पूरा जोर देते ही थे परन्तु देह के स्वास्थ्य और उसकी सम्भाल की अवहेलना करने को नहीं कहते थे। हाँ वे कहते थे कि बार-बार शारीरिक बीमारी की चर्चा करके अपने श्वास व्यर्थ नहीं गंवाने चाहिए क्योंकि आज जबकि प्रकृति तमोप्रधान है और हमने अज्ञान काल में विकर्म भी किये हैं तो रोग और व्याधियां तो आयेंगी ही। अतः उन्हीं में मन बुद्धि लगाये रखने से तो हम शिवबाबा की याद के लिए समय निकाल ही नहीं पायेंगे। अतः वे कहते बच्चे दवा और दुआ दोनों से काम लो और सेवा की अवस्था में भी योग को न भूलो।

ब्रह्मा बाबा के कर्म रूपी कदम
(जिन्हें हर ब्रह्मा वत्स को फॉलो कर समान बनना है)

18) आत्मिक दृष्टि और सर्व के शुभ चिंतक

अनेकानेक गुणों में से साकार बाबा में एक मुख्य गुण जो कि उनके व्यक्तित्व में सदा झलकता रहता, उनके चारों ओर पवित्रता बिखेरता रहता, वायुमण्डल को शुद्ध करता रहता और लोगों के जीवन को पलट देता, वह था आत्मिक दृष्टिकोण। बाबा सदा आत्मिक स्थिति में रहते हुए सब देहों में आत्मा को ही देखते। सबको समान दृष्टि से देखते, समान प्यार और सत्कार देते। बाबा कभी किसी का अशुभ अथवा अमंगल नहीं सोचते। दूसरों को भी वे सदा यही शिक्षा देते कि न किसी के अकल्याण की बात सोचो और न कभी मुख से अशुभ बोलो। बाबा सभी के शुभचिंतक बन रात-रात भर नींद त्याग कर भी उन्हें पावन बनाने तथा योगयुक्त करने के लिए, उन्हें प्रभु परिचय देने की योजनायें बनाते रहते।

हमारे मीठे-मीठे प्यारे साकार बाबा जिनकी विशेषताओं का वर्णन करना तो जैसे सूर्य को दीपक दिखाना है। हम ब्रह्मा वत्सों को उनके कदमों पर कदम रखते सबके लिए दृष्टान्त रूप बनना है।

ओम् शान्ति